भारतीय विद्‌यालय अल वादी अल कबीर (2020-21)

प्रश्न बैंक – कक्षा–दसवीं   कविता – पर्वत प्रदेश में पावस   कवि – सुमित्रानंदन पंत

1. कवि ने किस प्रदेश और ऋतु का वर्णन किया है तथा परिवर्तन की स्थिति किसमें दिखाई देती है ?

उत्तर– कवि ने पर्वतीय प्रदेश का वर्णन करते हुए बताया है कि किस प्रकार वर्षा ऋतु में प्रकृति के वेश, उसके रूप-आकार में परिवर्तन की स्थिति परिलक्षित होती है । यह परिवर्तन क्षण-क्षण होता है । कवि ने इसका सूक्ष्म चित्रण कविता में किया है ।

2. कवि का प्रकृति-चित्रण किस प्रकार का है ?

उत्तर– पंत जी का प्रकृति-चित्रण बाल सुलभ कल्पनाओं से भरा पड़ा है । पर्वतीय इलाकों में वर्षा के दृश्य के वर्णन में धरती और आकाश एकमेक हो गए लगते हैं । ये दृश्य जादू के खेल की तरह पल-पल बदलते रहते हैं। पूरे चित्रण में मानवीकरण का प्रयोग हुआ है । कवि की भाषा चित्रात्मक है ।

3. मेखलाकार पर्वत क्या देख रहा है ?

उत्तर–मेखलाकार पर्वत अपने फूलों की आँखों से नीचे तालाब के जल में अपने विशाल आकार को निहारने का प्रयत्न कर रहा है। ऐसा लगता है कि उसे अपने सौंदर्य को देखकर प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है ।

4. निर्झर क्या कर रहे प्रतीत होते हैं ?

उत्तर– झर-झर का शब्द करते हुए झर रहे निर्झर ऐसे लगते हैं कि पहाड़ की उच्चता और सुंदरता का यशगान कर रहे हैं । झरते हुए पानी की बूँदें मोतियों के हारों के समान सुंदर लगती हैं ।

5. तरुवर क्या कर रहे हैं ?

उत्तर– पहाड़ों पर उगने वाले वृक्ष पर्वत के हृदय में रहने वाली महत्त्वाकांक्षाएँ हैं । इस रूप में उगे ये वृक्ष अटल खड़े होकर एकटक आकाश की ओर निहार रहे हैं । ये चिंता में डूबे-से उदास प्रतीत हो रहे हैं ।

6. अचानक भूधर उड़ जाने से कवि का क्या आशय है ?

उत्तर– कवि कहना चाहते हैं कि जो सुंदर भूधर अभी-अभी दिखाई दे रहा था, वह अचानक गायब हो गया । ऐसा लगता है कि वह पहाड़ बादलों के पारे जैसे धवल और चमकीले पंख लगाकर फड़फड़ाता कहीं चला गया है। वास्तव में वर्षा ऋतु के प्रभाव से चारों ओर धुंध छा गई है । इस धुंध ने पहाड़ की सत्ता ही मिटा दी है ।

7. इंद्रदेव के खेल को स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर– यह दृश्य ऐसा लगता है मानो बादलों का राजा इंद्र बादल रूपी नभयान (वायुयान) पर सवार होकर अनेक प्रकार के जादू भरे खेल खेल रहा है ।

8. काव्य-सौंदर्य : “धँस गए _ _ _ _ _ _ _ जल गया ताल !”
पर्वत प्रदेश में जब धुंध छा जाती है, तब ऊँचे-ऊँचे शाल के वृक्ष भी उसी में समा जाते हैं। लगता है जैसे वे डर गए हैं और गायब हो गए हैं। कवि को कभी यह तालाब के जल जाने से उठ रहा धुआँ प्रतीत होता है।
मानवीकरण – ‘धँस गए _ _ _ _ _ ’, ‘जल गया ताल।’
पूरी कविता में अनुप्रास, पुनरुक्ति प्रकाश, उपमा, रूपक आदि अलंकारों का प्रयोग हुआ है।
कवि की कल्पना में नवीनता झलकती है।

9. ‘पर्वत प्रदेश में पावस’ कविता का प्रतिपाद्य लिखिए।
उत्तर– प्रस्तुत कविता ‘पर्वत प्रदेश में पावस’ प्रकृति के सुकुमार कवि सुमित्रानंदन पंत द्वारा रचित है। इस कविता में कवि ने पर्वतीय प्रदेश में वर्षा के समय में क्षण-क्षण होने वाले परिवर्तनों व अलौकिक दृश्यों का बड़ा सजीव चित्रण किया है। कवि कहता है कि महाकार पर्वत मानो अपने ही विशाल रूप को अपने चरणों में स्थित बड़े तालाब में अपने हज़ारों सुमन रूपी नेत्रों से निहार रहा है। बहते हुए झरने दर्शकों की नस-नस में उमंग एवं उल्लास भर रहे हैं। पर्वतों के सीनों को फाड़ कर उच्चाकांक्षाओं से युक्त पेड़ मानो बाहर आए हैं और अपलक व शांत आकाश को निहार रहे हैं। फिर अचानक ही पर्वत मानो बादल रूपी सफ़ेद और चमकीले पारे के परों को फड़फड़ाते हुए उड़ गए हैं। कभी-कभी तो ऐसा भी मालूम होता है कि मानो धरती पर आकाश टूट पड़ा हो और उसके भय से विशाल शाल के पेड़ ज़मीन में धँस गए हों। तालों से उठती भाप ऐसी जान पड़ती है, मानो उनमें आग-सी लग गई हो और धुआँ उठ रहा हो। कवि कहता है कि यह सब देखकर लगता है कि जैसे इंद्रदेव ही अपने इंद्रजाल से खेल रहे हैं।

10. पावस के दृश्य को कवि ने इंद्रजाल क्यों माना है ?
उत्तर– पावस के दृश्य को कवि ने इंद्रजाल माना है क्योंकि इस ऋतु में प्रकृति पल-पल अपना रूप बदलती है तो ऐसा लगता है, मानो वास्तविकता न होकर कोई मायाजाल हो अर्थात् मानो इंद्र ने ही यह जाल फैलाया है।

11. पर्वत प्रदेश में वर्षा ऋतु में प्राकृतिक सौंदर्य कई गुना बढ़ जाता है, परंतु पहाड़ों पर रहने वाले लोगों के दैनिक जीवन में क्या कठिनाइयाँ उत्पन्न होती होंगी ? उनके विषय में लिखिए।
उत्तर– पर्वत प्रदेश में वर्षा ऋतु में प्राकृतिक सौंदर्य कई गुना बढ़ जाता है। वहाँ क्षण-क्षण प्रकृति अपना वेश बदलती-सी नज़र आती है। कभी धूप चमकती नज़र आती है, कभी सूर्य बादलों की ओट में छिप जाता है, कभी प्रकृति का सुहावना रंग दिखाई देता है, तो कभी इतने घने बादल छा जाते हैं कि पर्वत तक अदृश्य हो जाते हैं। मात्र झरनों का शोर सुनाई देता रहता है। अचानक घनघोर वर्षा होने लगती है। निःसंदेह पर्वतों की प्रकृति के ये बदलते दृश्य सुहावने तो लगते हैं, पर्यटकों को आकर्षित भी करते हैं, परंतु पहाड़ों पर रहने वाले लोगों के लिए यह मौसम कठिनाइयों का कारण भी बन जाता है। वर्षा ऋतु में बादलों का फटना, चट्टानों का खिसकना, बर्फ़ीले तूफ़ानों का आना एक आम समस्या है, जिसमें गाँव-के-गाँव तबाह हो जाते हैं। फ़िसलन भरे रास्तों के कारण यातायात व्यवस्था ठप्प पड़ जाती है, जिससे रोज़मर्रा के लिए आवश्यक सामग्री तक उचित

समय पर नहीं पहुँच पाती। चिकित्सा-सुविधाएँ न पहुँचना, संचार व्यवस्था का ठप्प होना, सड़कों का टूटना, ऐसी अनेक समस्याएँ हैं, जिनका सामना इन पर्वतीय अंचल में रहने वाले लोगों को करना पड़ता है।

12. पर्वत अपना प्रतिबिंब तालाब में क्यों देख रहा है ?
उत्तर– पावस ॠतु के आने पर पर्वत का सौंदर्य द्विगुणित हो गया है। उस पर सहस्रों पुष्प खिल उठे हैं। पर्वत तो मानो स्वयं के सौंदर्य पर मुग्ध हो गया है। वह अपने चरणों में बहने वाले तालाब में अपना प्रतिबिंब निहार रहा है क्योंकि तालाब दर्पण की भाँति निर्मल और पारदर्शी है। तालाब के स्वच्छ जल में पर्वत को स्वयं का प्रतिबिंब स्पष्ट दृष्टिगत हो रहा है। वह स्वयं पर प्रफुल्लित कुसुमों रूपी आँखों से अपनी छवि को तालाब में निहार कर प्रसन्न हो रहा है।

13. पावस ॠतु में पर्वत प्रदेश का रूप क्यों परिवर्तित हो जाता है ?
उत्तर– पावस ॠतु (वर्षा ॠतु) में पर्वतीय प्रदेश की प्रकृति प्रतिपल अपना नया वेश ग्रहण करती दिखाई देती है। क्षण में बादलों का घिरना, वर्षा होना तथा पुनः वातावरण का साफ़-स्वच्छ हो धूप खिलना, पर्वतों पर आम घटना है। अत्यधिक ऊँचाई के कारण मौसम का परिवर्तन वहाँ एक सामान्य क्रिया है, जो वर्षा ॠतु में और अधिक तीव्रता से होता है।

<u>पाठ्य-पुस्तक के अभ्यास-प्रश्न</u>

14. 'मेखलाकार' शब्द का क्या अर्थ है? कवि ने इस शब्द का प्रयोग यहाँ क्यों किया है?
उत्तर: मेखला एक आभूषण है जिसे कमर में पहना जाता है। यह ऊपर-नीचे उठती हुई तरंगों जैसी रेखा बनाती है। पर्वत श्रृंखला भी ऐसी ही दिखाई देती है। इसलिए कवि ने 'मेखलाकार' शब्द का प्रयोग किया है।

15. 'सहस्र दृग-सुमन' से क्या तात्पर्य है? कवि ने इस पद का प्रयोग किसके लिए किया होगा?
उत्तर: पहाड़ पर उग आए पेड़ों पर असंख्य रंग-बिरंगे फूल दिखाई देते हैं। ऐसा लगता है कि ये पहाड़ की असंख्य आँखें हैं। इसलिए कवि ने यहाँ पर इस पद का प्रयोग किया है।

16. कवि ने तालाब की समानता किसके साथ दिखाई है और क्यों?
उत्तर: तालाब या किसी भी अन्य जलराशि में आस-पास की चीजों का प्रतिबिंब दिखाई देता है। इसलिए कवि ने तालाब की तुलना किसी विशाल दर्पण से की है।

17. पर्वत के हृदय से उठकर ऊँचे-ऊँचे वृक्ष आकाश की ओर क्यों देख रहे हैं और वे किस बात को प्रतिबिंबित करते हैं?
उत्तर: पर्वत के हृदय से पेड़ उठकर खड़े हुए हैं और शांत आकाश को अपलक और अचल होकर किसी गहरी चिंता में मग्न होकर बड़ी महत्त्वाकांक्षा से देख रहे हैं। ये हमें ऊँचा, और ऊँचा उठने की प्रेरणा दे रहे हैं।

18. शाल के वृक्ष भयभीत होकर धरती में क्यों धँस गए?

उत्तर: घने कोहरे में शाल के वृक्ष दिखाई देना बंद हो गए हैं। ऐसा लगता है कि वे उस घने कोहरे से डरकर धरती में समा गए हैं।

19. पावस ऋतु में प्रकृति में कौन-कौन से परिवर्तन होते हैं ? कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर: पावस ऋतु में प्रकृति में निम्नलिखित परिवर्तन होते हैं:-

*इस ऋतु में वातावरण हर वक़्त बदलता रहता है ।

*विभिन्न प्रकार के रंग-बिरंगे फूल खिल जाते हैं ।

*पर्वत के नीचे फैले तालाब में पर्वत की परछाईं दिखाई देती है ।

*मोती की लड़ियों की तरह बहते झरने ऐसे लगते हैं मानो वे पर्वत का गुणगान कर रहे हों ।

*पर्वत पर उगे ऊँचे वृक्ष आसमान को चिंतित होकर निहार रहे हैं ।

*तेज़ वर्षा के कारण चारों तरफ़ धुंध छा जाती है ।

*लगता है आकाश धरती पर टूट पड़ा है और शाल के पेड़ भयभीत होकर धरती में धँस गए हैं ।

*ऐसा प्रतीत होता है कि तालाब में आग लग गई है और इंद्रदेव जादू के खेल दिखा रहे हैं ।

****